भजन

तर्ज– दैरो हरम में रहने वाले

.अर्श– अज़ीम में रहने वालो
अपने धनी को अब पहचानों

1) प्राणनाथ जी को जाहेर करके, तुम भी अपना फर्ज निभा लो
अर्श रूहों में भरम ना डालो

2) भूली हुई यहाँ है जो रूहें,हक ईलम से उनको जगालो
अर्श रूहों में भरम ना डालो

3) धनी देवचन्द्र जी ने परदा किया था,ब्रज और रास की चर्चा सुनाकर
वो पर्दा अब तुम न डालो

4) पूर्णब्रह्म आये हैं जाहेर, देखो रुह की आँखें खोलो
अर्श रुहों में भरम ना डालो

5) अपना वादा याद करो तुम,शर्मिन्दगी से खुद को बचालो
अर्श रूहों में भरम ना डालो